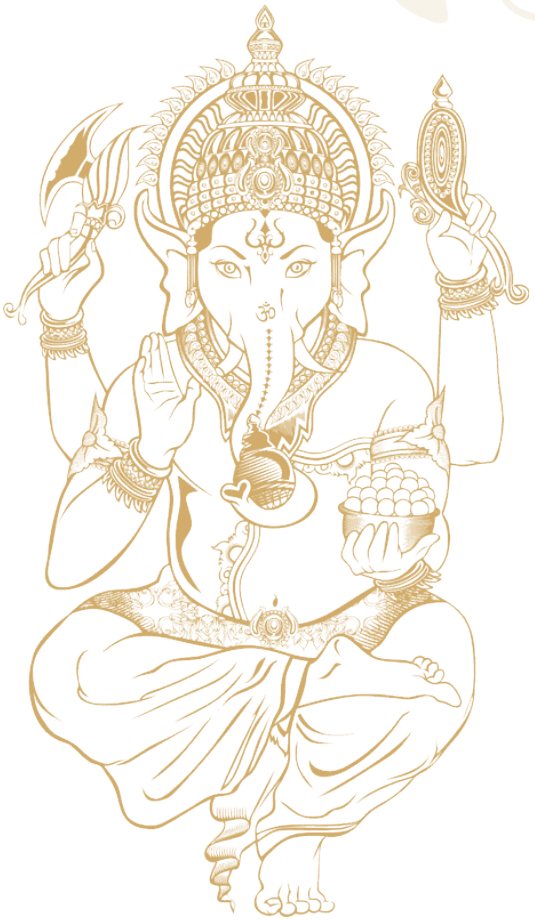

Ovi vijay wayal

27 May 2016

12:35 PM

Nerul

Model: All-Dosha-Report **Order No: 121201601**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**27/05/2016**
दिवस	शुक्रवार
जन्म समय	**12:35:00 कला**
इष्ट	16:26:10 घटी
स्थान	**Nerul**
देश	India

अक्षांश	19:02:00 उत्तर
रेखांश	73:01:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:37:56 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	11:57:04 कला
वेलान्तर	00:02:49 कला
साम्पातिक वेल	04:18:09 कला
सूर्योदय	06:00:31 कला
सूर्यास्त	19:09:55 कला
दिनमान	13:09:23 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्याचे अंश	12:20:18 वृषभ
लग्नाचे अंश	11:54:53 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	सिंह – रवि
राशि–स्वामी	**मकर – शनि**
नक्षत्र–चरण	**श्रवण – 2**
नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
योग	ब्रह्म
करण	गर
गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मांजर
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खू–खुशी
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1938	ज्येष्ठ	6
पंजाबी	संवत : 2073	ज्येष्ठ	14
बंगाली	सन् : 1423	ज्येष्ठ	13
तमिल	संवत : 2073	वैकाशी	14
केरल	कोल्लम : 1191	इदवन	13
नेपाली	संवत : 2073	ज्येष्ठ	14
चैत्रादी	संवत : 2073	ज्येष्ठ	कृष्ण 5
कार्तिकादी	संवत : 2073	वैशाख	कृष्ण 5

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 5
तिथि समाप्ति वेल _____: 07:28:20
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: श्रवण
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 27:58:36 कला
जन्म योग _____: श्रवण
सूर्योदय समयी योग _____: ब्रह्म
योग समाप्ति वेल _____: 22:58:00 कला
जन्म योग _____: ब्रह्म
सूर्योदय समयी करण _____: तैतिल
करण समाप्ति वेल _____: 07:28:20 कला
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 22:38:22
भभोग _____: 61:07:23
भोग्य दशा वेल _____: चंद्र 6 वर्ष 3 मा 25 दि

घात चक्र

मास _____: वैशाख
तिथि _____: 4-9-14
दिवस _____: मंगळवार
नक्षत्र _____: रोहिणी
योग _____: वैधृति
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: उंदीर
लग्न _____: कुम्भ
रवि _____: कुम्भ
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगळ _____: मीन
बुध _____: धनु
गुरु _____: मेष
शुक्र _____: वृषभ
शनि _____: मकर
राहु _____: मिथुन

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

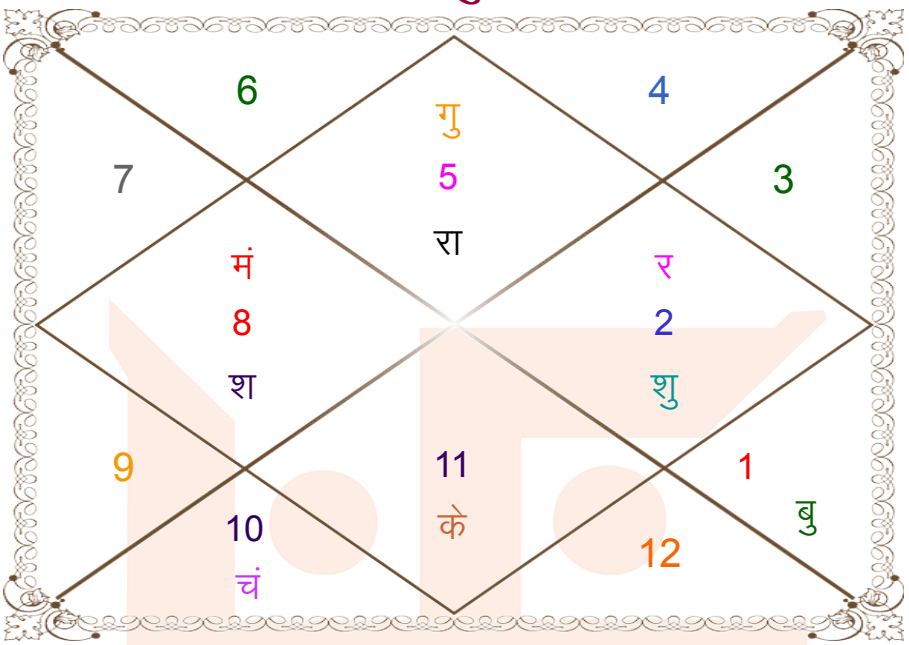

चन्द्र कुंडली

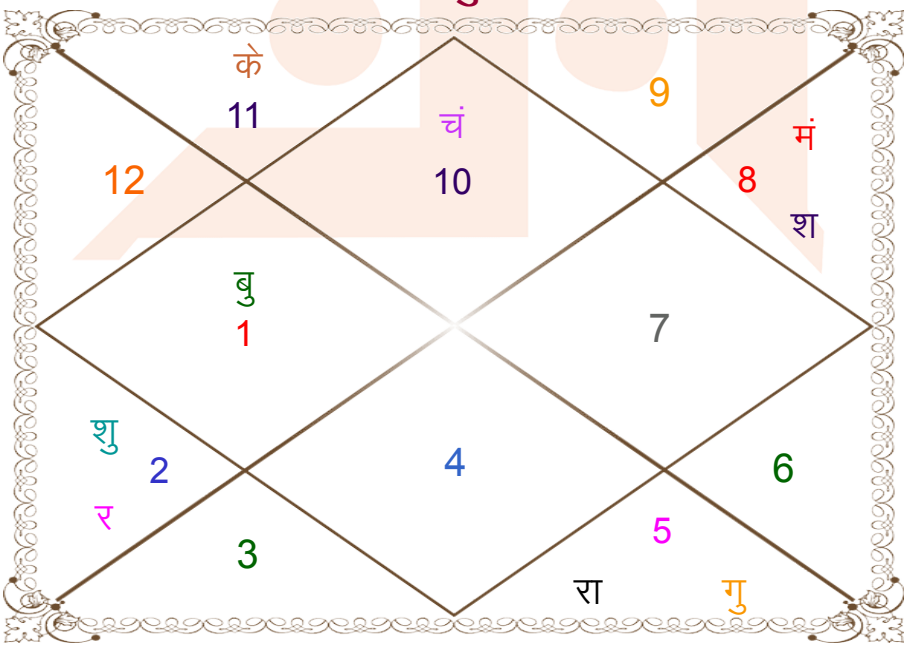

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

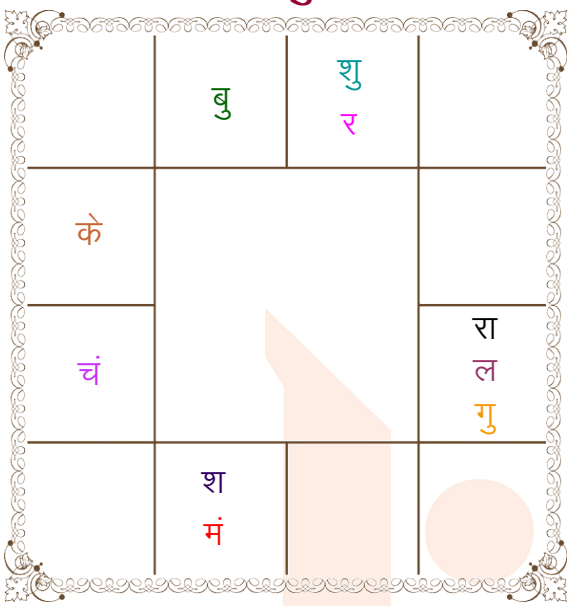

लग्न कुंडली

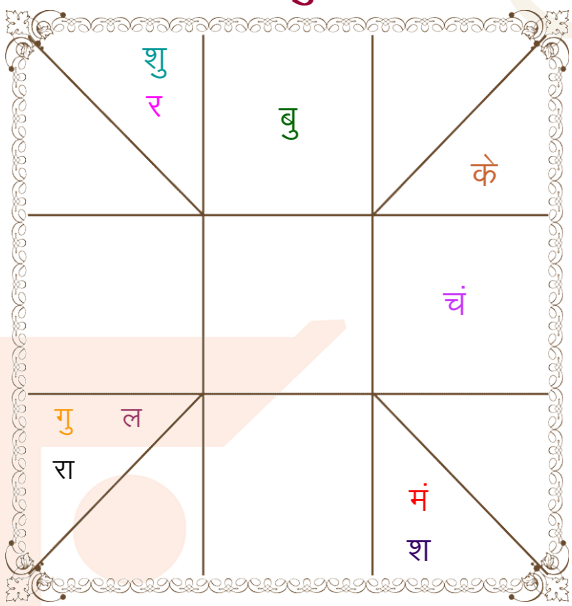

विंशोत्तरी
चन्द्र 6वर्ष 3मा 25दि

चन्द्र

27/05/2016

21/09/2132

चन्द्र	21/09/2022
मंगळ	21/09/2029
राहु	21/09/2047
गुरु	21/09/2063
शनि	21/09/2082
बुध	21/09/2099
केतु	22/09/2106
शुक्र	22/09/2126
रवि	21/09/2132

योगिनी
मंगळा 0वर्ष 7मा 17दि

भद्रिका

13/01/2026

13/01/2031

भद्रिका	24/09/2026
उल्का	25/07/2027
सिद्धा	14/07/2028
संकटा	24/08/2029
मंगळा	14/10/2029
पिंगला	23/01/2030
धान्या	24/06/2030
भ्रामरी	13/01/2031

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	11:54:53	336:33:47	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	———
सूर्य			वृष	12:20:18	00:57:35	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			मक	14:54:31	13:03:16	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	सम राशि
मंगळ	व		वृश्चि	06:00:49	00:20:59	अनुराधा	1	17	मंगळ	शनि	बुध	स्वगृही
बुध			मेष	21:05:51	00:21:15	भरणी	3	2	मंगळ	शुक्र	गुरु	सम राशि
गुरु			सिंह	19:38:37	00:03:09	पू.फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	मित्र राशि
शुक्र		अ	वृष	09:27:59	01:13:45	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	स्वगृही
शनि	व		वृश्चि	19:32:50	00:04:23	ज्येष्ठा	1	18	मंगळ	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		सिंह	24:01:03	00:03:32	पू.फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	24:01:03	00:03:32	पू.भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			मीन	28:52:58	00:02:42	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	———
नेप			कुंभ	17:52:14	00:00:34	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	सूर्य	———
प्लूटो	व		धनु	23:02:45	00:01:02	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	———
दशम भाव			वृष	12:18:57	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	राहु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 24:05:06

लग्न–चलित

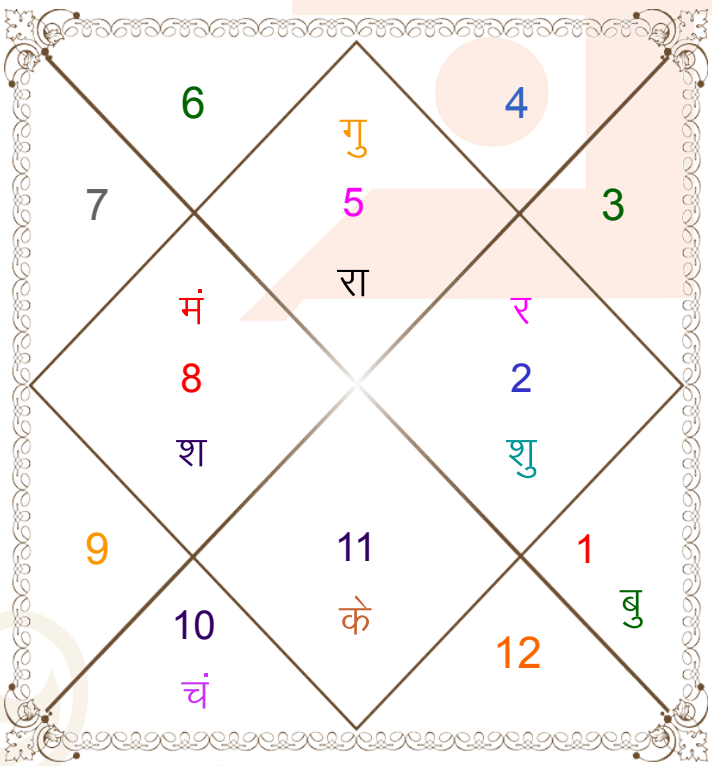

चन्द्र कुंडली

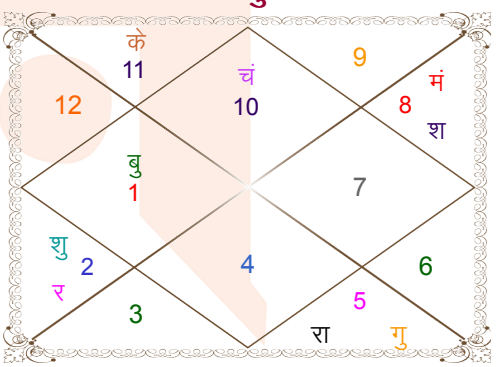

नवमांश कुंडली

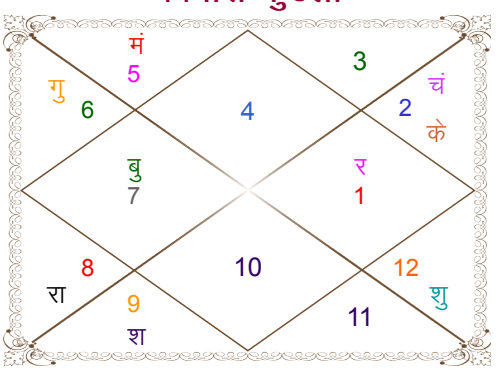

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	26:58:53	सिंह	11:54:53
2	सिंह	26:58:53	कन्या	12:02:54
3	कन्या	27:06:55	तुला	12:10:55
4	तुला	27:14:56	वृश्चिक	12:18:57
5	वृश्चिक	27:14:56	धनु	12:10:55
6	धनु	27:06:55	मकर	12:02:54
7	मकर	26:58:53	कुम्भ	11:54:53
8	कुम्भ	26:58:53	मीन	12:02:54
9	मीन	27:06:55	मेष	12:10:55
10	मेष	27:14:56	वृषभ	12:18:57
11	वृषभ	27:14:56	मिथुन	12:10:55
12	मिथुन	27:06:55	कर्क	12:02:54

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	11:54:53
2	कन्या	10:24:41
3	तुला	11:11:13
4	वृश्चिक	12:18:57
5	धनु	12:41:35
6	मकर	12:30:53
7	कुम्भ	11:54:53
8	मीन	10:24:41
9	मेष	11:11:13
10	वृषभ	12:18:57
11	मिथुन	12:41:35
12	कर्क	12:30:53

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा

चलित कुंडली

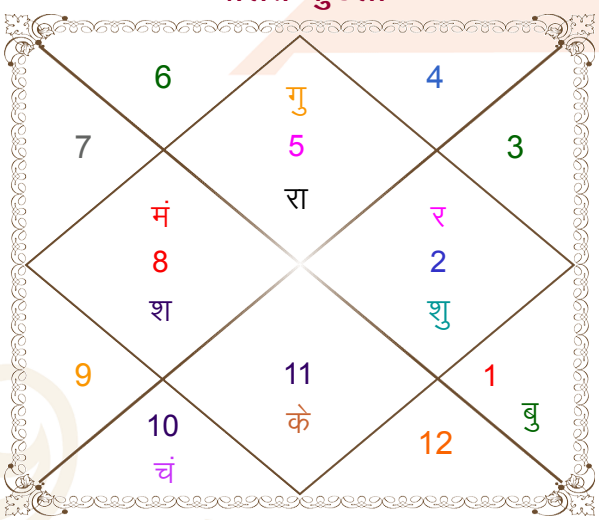

भाव कुंडली

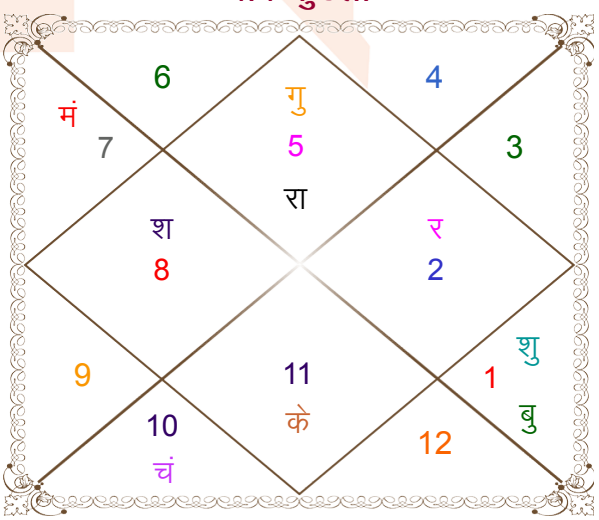

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	युवा	खल	कौतुक	3.28	103 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	शक्त	कौतुक	4.31	59 %
मंगळ	कलत्र	भ्रातृ	वृद्ध	स्वस्थ	शयन	4.08	37 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	वृद्ध	शान्त	नेत्रपाणि	0.50	42 %
गुरु	अमात्य	धन	वृद्ध	मुदित	शयन	7.02	69 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	वृद्ध	विकल	शयन	9.17	43 %
शनि	भ्रातृ	आयुष्य	कुमार	खल	सभा	1.67	52 %
राहु	———	ज्ञान	मृत	खल	नेत्रपाणि	0.00	19 %
केतु	———	मोक्ष	मृत	खल	सभा	0.00	19 %
एकुण						**30.04**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा

चलित कुंडली

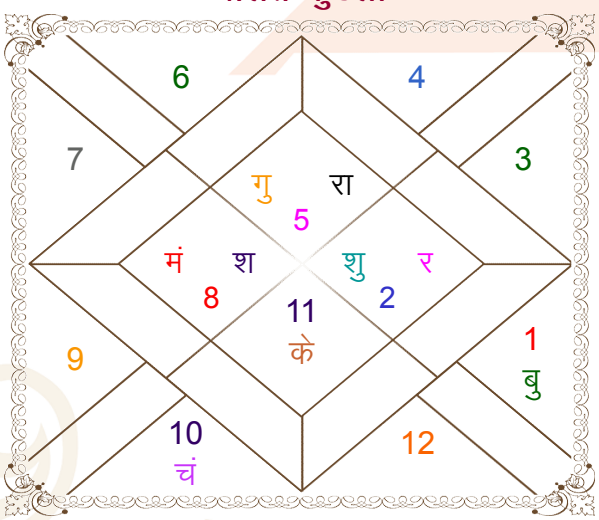

लग्न–चलित

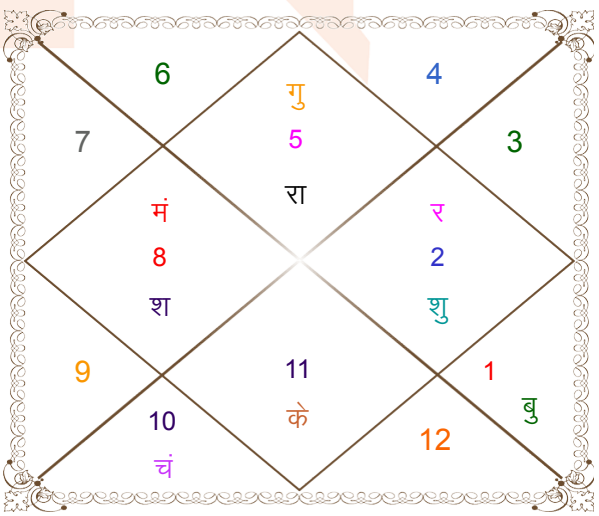

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : चन्द्र 6 वर्ष 3 महिना 25 दिवस

चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
27/05/2016		21/09/2022		21/09/2029		21/09/2047		21/09/2063	
21/09/2022		21/09/2029		21/09/2047		21/09/2063		21/09/2082	
	00/00/0000	मंगळ	17/02/2023	राहु	03/06/2032	गुरु	08/11/2049	शनि	24/09/2066
	00/00/0000	राहु	07/03/2024	गुरु	27/10/2034	शनि	22/05/2052	बुध	03/06/2069
	27/05/2016	गुरु	10/02/2025	शनि	02/09/2037	बुध	28/08/2054	केतु	13/07/2070
गुरु	21/12/2016	शनि	22/03/2026	बुध	22/03/2040	केतु	03/08/2055	शुक्र	11/09/2073
शनि	22/07/2018	बुध	19/03/2027	केतु	09/04/2041	शुक्र	03/04/2058	सूर्य	24/08/2074
बुध	21/12/2019	केतु	16/08/2027	शुक्र	09/04/2044	सूर्य	21/01/2059	चंद्र	25/03/2076
केतु	21/07/2020	शुक्र	15/10/2028	सूर्य	04/03/2045	चंद्र	22/05/2060	मंगळ	04/05/2077
शुक्र	22/03/2022	सूर्य	20/02/2029	चंद्र	03/09/2046	मंगळ	28/04/2061	राहु	10/03/2080
सूर्य	21/09/2022	चंद्र	21/09/2029	मंगळ	21/09/2047	राहु	21/09/2063	गुरु	21/09/2082

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
21/09/2082		21/09/2099		22/09/2106		22/09/2126		21/09/2132	
21/09/2099		22/09/2106		22/09/2126		21/09/2132		00/00/0000	
बुध	17/02/2085	केतु	17/02/2100	शुक्र	21/01/2110	सूर्य	09/01/2127	चंद्र	23/07/2133
केतु	14/02/2086	शुक्र	19/04/2101	सूर्य	22/01/2111	चंद्र	11/07/2127	मंगळ	21/02/2134
शुक्र	15/12/2088	सूर्य	25/08/2101	चंद्र	21/09/2112	मंगळ	16/11/2127	राहु	23/08/2135
सूर्य	21/10/2089	चंद्र	26/03/2102	मंगळ	21/11/2113	राहु	10/10/2128	गुरु	28/05/2136
चंद्र	22/03/2091	मंगळ	22/08/2102	राहु	21/11/2116	गुरु	29/07/2129		00/00/0000
मंगळ	19/03/2092	राहु	10/09/2103	गुरु	23/07/2119	शनि	11/07/2130		00/00/0000
राहु	06/10/2094	गुरु	16/08/2104	शनि	22/09/2122	बुध	17/05/2131		00/00/0000
गुरु	11/01/2097	शनि	25/09/2105	बुध	23/07/2125	केतु	22/09/2131		00/00/0000
शनि	21/09/2099	बुध	22/09/2106	केतु	22/09/2126	शुक्र	21/09/2132		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल चंद्र 6 वर्ष 3 मा 17 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगळ - शनि		मंगळ - बुध		मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य	
10/02/2025		22/03/2026		19/03/2027		16/08/2027		15/10/2028	
22/03/2026		19/03/2027		16/08/2027		15/10/2028		20/02/2029	
शनि	16/04/2025	बुध	13/05/2026	केतु	28/03/2027	शुक्र	26/10/2027	सूर्य	21/10/2028
बुध	12/06/2025	केतु	03/06/2026	शुक्र	22/04/2027	सूर्य	16/11/2027	चंद्र	01/11/2028
केतु	05/07/2025	शुक्र	02/08/2026	सूर्य	29/04/2027	चंद्र	21/12/2027	मंगळ	08/11/2028
शुक्र	11/09/2025	सूर्य	20/08/2026	चंद्र	12/05/2027	मंगळ	15/01/2028	राहु	27/11/2028
सूर्य	01/10/2025	चंद्र	19/09/2026	मंगळ	21/05/2027	राहु	19/03/2028	गुरु	14/12/2028
चंद्र	04/11/2025	मंगळ	10/10/2026	राहु	12/06/2027	गुरु	15/05/2028	शनि	04/01/2029
मंगळ	28/11/2025	राहु	04/12/2026	गुरु	02/07/2027	शनि	21/07/2028	बुध	22/01/2029
राहु	27/01/2026	गुरु	21/01/2027	शनि	25/07/2027	बुध	20/09/2028	केतु	29/01/2029
गुरु	22/03/2026	शनि	19/03/2027	बुध	16/08/2027	केतु	15/10/2028	शुक्र	20/02/2029

मंगळ - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
20/02/2029		21/09/2029		03/06/2032		27/10/2034		02/09/2037	
21/09/2029		03/06/2032		27/10/2034		02/09/2037		22/03/2040	
चंद्र	09/03/2029	राहु	16/02/2030	गुरु	28/09/2032	शनि	10/04/2035	बुध	12/01/2038
मंगळ	22/03/2029	गुरु	27/06/2030	शनि	13/02/2033	बुध	05/09/2035	केतु	08/03/2038
राहु	23/04/2029	शनि	30/11/2030	बुध	18/06/2033	केतु	04/11/2035	शुक्र	10/08/2038
गुरु	21/05/2029	बुध	19/04/2031	केतु	08/08/2033	शुक्र	26/04/2036	सूर्य	25/09/2038
शनि	24/06/2029	केतु	15/06/2031	शुक्र	01/01/2034	सूर्य	17/06/2036	चंद्र	12/12/2038
बुध	24/07/2029	शुक्र	27/11/2031	सूर्य	14/02/2034	चंद्र	12/09/2036	मंगळ	04/02/2039
केतु	05/08/2029	सूर्य	15/01/2032	चंद्र	28/04/2034	मंगळ	11/11/2036	राहु	24/06/2039
शुक्र	10/09/2029	चंद्र	06/04/2032	मंगळ	18/06/2034	राहु	17/04/2037	गुरु	26/10/2039
सूर्य	21/09/2029	मंगळ	03/06/2032	राहु	27/10/2034	गुरु	02/09/2037	शनि	22/03/2040

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगळ	
22/03/2040		09/04/2041		09/04/2044		04/03/2045		03/09/2046	
09/04/2041		09/04/2044		04/03/2045		03/09/2046		21/09/2047	
केतु	13/04/2040	शुक्र	09/10/2041	सूर्य	25/04/2044	चंद्र	18/04/2045	मंगळ	25/09/2046
शुक्र	16/06/2040	सूर्य	03/12/2041	चंद्र	23/05/2044	मंगळ	20/05/2045	राहु	22/11/2046
सूर्य	05/07/2040	चंद्र	04/03/2042	मंगळ	11/06/2044	राहु	11/08/2045	गुरु	12/01/2047
चंद्र	06/08/2040	मंगळ	07/05/2042	राहु	30/07/2044	गुरु	23/10/2045	शनि	13/03/2047
मंगळ	29/08/2040	राहु	18/10/2042	गुरु	12/09/2044	शनि	17/01/2046	बुध	07/05/2047
राहु	25/10/2040	गुरु	13/03/2043	शनि	03/11/2044	बुध	05/04/2046	केतु	29/05/2047
गुरु	15/12/2040	शनि	03/09/2043	बुध	20/12/2044	केतु	07/05/2046	शुक्र	01/08/2047
शनि	14/02/2041	बुध	05/02/2044	केतु	08/01/2045	शुक्र	06/08/2046	सूर्य	20/08/2047
बुध	09/04/2041	केतु	09/04/2044	शुक्र	04/03/2045	सूर्य	03/09/2046	चंद्र	21/09/2047

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
21/09/2047		08/11/2049		22/05/2052		28/08/2054		03/08/2055	
08/11/2049		22/05/2052		28/08/2054		03/08/2055		03/04/2058	
गुरु	03/01/2048	शनि	04/04/2050	बुध	16/09/2052	केतु	16/09/2054	शुक्र	13/01/2056
शनि	05/05/2048	बुध	13/08/2050	केतु	03/11/2052	शुक्र	12/11/2054	सूर्य	01/03/2056
बुध	24/08/2048	केतु	06/10/2050	शुक्र	21/03/2053	सूर्य	29/11/2054	चंद्र	22/05/2056
केतु	08/10/2048	शुक्र	09/03/2051	सूर्य	02/05/2053	चंद्र	28/12/2054	मंगळ	17/07/2056
शुक्र	15/02/2049	सूर्य	24/04/2051	चंद्र	10/07/2053	मंगळ	17/01/2055	राहु	11/12/2056
सूर्य	26/03/2049	चंद्र	10/07/2051	मंगळ	27/08/2053	राहु	09/03/2055	गुरु	19/04/2057
चंद्र	30/05/2049	मंगळ	02/09/2051	राहु	29/12/2053	गुरु	23/04/2055	शनि	21/09/2057
मंगळ	14/07/2049	राहु	19/01/2052	गुरु	18/04/2054	शनि	16/06/2055	बुध	06/02/2058
राहु	08/11/2049	गुरु	22/05/2052	शनि	28/08/2054	बुध	03/08/2055	केतु	03/04/2058

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि	
03/04/2058		21/01/2059		22/05/2060		28/04/2061		21/09/2063	
21/01/2059		22/05/2060		28/04/2061		21/09/2063		24/09/2066	
सूर्य	18/04/2058	चंद्र	02/03/2059	मंगळ	11/06/2060	राहु	06/09/2061	शनि	13/03/2064
चंद्र	12/05/2058	मंगळ	31/03/2059	राहु	01/08/2060	गुरु	01/01/2062	बुध	16/08/2064
मंगळ	29/05/2058	राहु	12/06/2059	गुरु	15/09/2060	शनि	20/05/2062	केतु	19/10/2064
राहु	12/07/2058	गुरु	16/08/2059	शनि	08/11/2060	बुध	21/09/2062	शुक्र	20/04/2065
गुरु	20/08/2058	शनि	01/11/2059	बुध	26/12/2060	केतु	11/11/2062	सूर्य	14/06/2065
शनि	05/10/2058	बुध	09/01/2060	केतु	15/01/2061	शुक्र	06/04/2063	चंद्र	13/09/2065
बुध	16/11/2058	केतु	06/02/2060	शुक्र	13/03/2061	सूर्य	20/05/2063	मंगळ	17/11/2065
केतु	03/12/2058	शुक्र	27/04/2060	सूर्य	30/03/2061	चंद्र	01/08/2063	राहु	30/04/2066
शुक्र	21/01/2059	सूर्य	22/05/2060	चंद्र	28/04/2061	मंगळ	21/09/2063	गुरु	24/09/2066

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
24/09/2066		03/06/2069		13/07/2070		11/09/2073		24/08/2074	
03/06/2069		13/07/2070		11/09/2073		24/08/2074		25/03/2076	
बुध	10/02/2067	केतु	27/06/2069	शुक्र	22/01/2071	सूर्य	29/09/2073	चंद्र	12/10/2074
केतु	09/04/2067	शुक्र	02/09/2069	सूर्य	20/03/2071	चंद्र	28/10/2073	मंगळ	14/11/2074
शुक्र	19/09/2067	सूर्य	22/09/2069	चंद्र	25/06/2071	मंगळ	17/11/2073	राहु	09/02/2075
सूर्य	08/11/2067	चंद्र	26/10/2069	मंगळ	31/08/2071	राहु	08/01/2074	गुरु	27/04/2075
चंद्र	28/01/2068	मंगळ	19/11/2069	राहु	21/02/2072	गुरु	23/02/2074	शनि	28/07/2075
मंगळ	26/03/2068	राहु	18/01/2070	गुरु	24/07/2072	शनि	19/04/2074	बुध	18/10/2075
राहु	20/08/2068	गुरु	13/03/2070	शनि	23/01/2073	बुध	07/06/2074	केतु	20/11/2075
गुरु	29/12/2068	शनि	17/05/2070	बुध	06/07/2073	केतु	28/06/2074	शुक्र	25/02/2076
शनि	03/06/2069	बुध	13/07/2070	केतु	11/09/2073	शुक्र	24/08/2074	सूर्य	25/03/2076

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	9
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 5
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिवस	मंगळ, रवि, गुरू
शुभ ग्रह	मंगळ, रवि, गुरु
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	सूर्य मणि, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	पोवले
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गहू
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	94%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
पोवले	मंगळ	92%	सुख, भाग्योदय
पन्ना	बुध	78%	भाग्योदय, धनार्जन, धन
पुष्कराज	गुरु	75%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटणा पासून सुरक्षा
हीरा	शुक्र	75%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	73%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	61%	दम्पति, सुख
नीलम	शनि	6%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	0%	शत्रु व रोग, व्यय

रत्न की शुभता

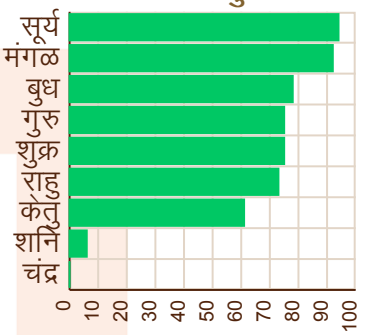

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	21/09/2022	100%	25%	92%	84%	75%	75%	6%	61%	47%
मंगळ	21/09/2029	100%	12%	100%	66%	81%	75%	6%	61%	67%
राहु	21/09/2047	81%	0%	79%	78%	75%	81%	19%	86%	47%
गुरु	21/09/2063	100%	12%	98%	66%	88%	62%	6%	73%	61%
शनि	21/09/2082	81%	0%	79%	84%	75%	81%	31%	80%	47%
बुध	21/09/2099	100%	0%	92%	91%	75%	81%	6%	73%	61%
केतु	22/09/2106	81%	0%	98%	78%	75%	81%	0%	61%	73%
शुक्र	22/09/2126	81%	0%	92%	84%	75%	87%	19%	80%	67%
सूर्य	21/09/2132	100%	12%	98%	78%	81%	62%	0%	61%	47%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
चतुर्थस्थान चरण	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टमस्थान चरण	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
चतुर्थस्थान चरण	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
अष्टमस्थान चरण	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा पहला चरण	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
चतुर्थस्थान चरण	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
अष्टमस्थान चरण	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	सन्तति
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	दम्पति
चतुर्थस्थान चरण	सम	बदनामी
अष्टमस्थान चरण	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगल–लग्नात् चतुर्थ अष्टम् द्वादश भावात असेल तर असा मांगलिक दोष होतात.।। यथोक्तम्।। लग्ने ब्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होतात. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म समय वर मंगळ ची स्थिति कुंडलीत चतुर्थ भाव मधे आहे अतः आपण मंगळी आहे, पण शास्त्रीय नियमानुसार तुमचा मांगळिक दोश भंग आहे अतः मंगळी योग चा शुभ प्रभाव पूर्ण विद्यमान रहणार ज्या मुळे जीवना मधे सर्व सुख साधन आणि ऐश्वर्य युक्त आणि पूर्ण धनार्जन करून सुख शांति चा जीवन मिळेल शरीर स्वस्थ आणि खुश रहणार. मंगळ प्रभाव पासून विवाह मधे काही उशीरता येणारी पण या मधे काही अशुभ परिणाम नाय होणार तसेच अडचणे नाय येणारी. पण विवाह नंतर कधीं–मधीं नवरा चा स्वास्थ्य मधे काही प्रभाव होऊ सकतो कुंडली मधे चतुर्थ भावात मंगळ पासून जीवन मधे आवश्यक सुखाचा साधन भेंटणार, मकान, जमीन, वगेरे चा लाभ होणार ज्यामुळे सांसारिक जीवन सुखी होणार सप्तम भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे नवरा चा स्वास्थ्य कधीं–मधीं मध्यम रहणार पण जास्ती अशुभ प्रभाव नाय होणार. चतुर्थ भाव पासून दशम भाव वर मंगळ ची दृष्टि तुमचे कार्य क्षेत्रात मजबूती देणार या मुळे आपण काही मोठे अधिकारी किंवा सम्माना चे पद वर प्रतिष्ठित होणारी. अखारवे भावात मंगळ ची दृष्टि पासून आपण मिळकत साधनां चा वृद्धि करणारी तसेच परिश्रम आणि बुद्धि बळ पासून आपण फार धन एकत्रित करणारे तसेच जीवना चा सर्व भौतिक साधनां चे उपभोगी होउन संपूर्ण विवाहिक जीवन सुखी आणि शांति युद्ध होणार. स्वतः चा दांपत्य जीवन जास्ती सुखी ठेवाय साठी आपण कोण पण मांगळिक शिवाय पासून विवाह करावे ज्यांचा मांगळिक दोष भंग असणार. जर कुंडली मिलान समयवार ही गोष्ठी ची पूर्ण काळजी ठेवतो तर संपूर्ण राजनैतिक लाभ सुख, सौभाग्य धन संपत्ति युद्ध होणार आणि सुखी जीवन होणार. ही गोष्ठ काळजी ठेवायला पाहिजे कीं पुरुष ची कुंडली मधे पण मंगळ चतुर्थ भावात नाय होणार पाहिजे. समान भावाचा मंगळ जीवनाला अनावश्यक अडचणे उत्पन्न करतात, ज्या मुळे राजनैतिक लाभात त्रास होउ सकतात. अतः हा मंगळ विशेष कार्य मधे अडचणे उत्पन्न क सकतो. यांचे शिवाय मंगळ शुभ फळ देणार तसेच परस्पर संबन्ध बरा होणार आणि काही त्रास नाय होणार. अतः सुखी जीवना साठी सावध होऊन आखेर फैसले करा आणि नंतर विवाह करावे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगळ और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता हैं। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा

मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म सिंह लग्नी झाला आहे. यामुळे आपले शारीरिक आरोग्य सामान्यपणे उत्तम राहील आणि बलवानही असेल. आपल्या व्यक्तिमत्वाची विशेषता ही आहे की आपण निडर व्यक्ती असाल आणि कुणाचीही पर्वा न करता कोणत्याही उच्च नेता किंवा अधिकारीशी चर्चा कराल. आवाजामध्ये थोडा खर्जातील असेल आणि कोणतेही काम आपण गांभीर्याने कराल. जेवण कमी असेल. आयुष्यात स्वकष्टाने अपेक्षित भौतिक सुखसाधने प्राप्त कराल आणि आनंदाने त्याचा उपभोग घ्याल. शत्रू किंवा विरोधकाना पराजित करण्यामध्ये नेहमी यशस्वी व्हाल आणि शत्रूचा मानहानी करण्यात गौरव वाटेल. उत्साहदेखील भरपूर असल्याने सांसारिक कोणतेही कार्य उत्साहपूर्वक संपन्न कराल. स्पर्धेमध्ये नेहमी यश मिळेल आणि विरोधक नेहमी भयभीत होऊन चिंतातूर असतील. पुत्रसंतती कमी असेल.

कधी कधी आपल्या स्वभावामध्ये उग्रत्वाचा भाव घष्टिगोचर होऊ शकतो. आपण एक आत्मविश्वासी व्यक्ती असाल आणि आपल्या बुद्धि, पराक्रम आणि कामावर पूर्ण विश्वास ठेवाल पण त्यामुळे कधी कधी तुम्ही दुसऱ्याला तुच्छ समजाल आणि त्यातून तुमच्या मानसन्मान व छबीवर विपरित परिणाम होऊ शकतो. माझ्यापेक्षा कोणी श्रेष्ठ नाही असाही भाव निर्माण होऊ शकतो. आपण एक सिद्धांतवादी पुरूष असाल आणि आपल्या सिद्धांतांच्या रक्षणासाठी कोणत्याही थराला जाण्याची वृत्ती असेल. मनामध्ये औदार्यही असेल आणि इतरेजनांवर प्रेम व सहानुभूती वेळोवेळी प्रदर्शित कराल. त्यामुळे समाजामध्ये मानसन्मान व प्रतिष्ठेत वृद्धि होईल आणि सर्व लोक आपला प्रभाव व पराक्रम स्वीकारतील.

आपल्या गुण व पराक्रमाने कोणत्याही कामात उच्च पद प्राप्त करू शकता. धार्मिक, दानी आणि विश्वासार्ह असल्याने उच्चाधिकारी किंवा एखाद्या संस्थेचा अध्यक्ष होऊ शकता. नेतृत्वक्षमता असेल आणि आपले अनुयायी आपल्याला आश्रयदाता समजून प्रामाणिकपणे आपल्या आज्ञेचे पालन करतील. धनसंपत्ती प्राप्त कराल, परंतु नोकर, कुलकार्य किंवा न्यायालयीन विवादांमुळे त्रासलेले असाल, म्हणून बुद्धिमत्तापूर्वक आपले काम पूर्ण करावे. त्याचबरोबर आपण इतर योग्य लोकांचा उचित सन्मान कराल तर सन्माननीय व्यक्ती होऊ शकता. यथोक्तम–

कृशोदरश्चारूपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोल्प भक्षः।
सुज्ञातबुद्धिर्मनुजोभिमाने पञ्चानने सज्जनने विलग्ने।।

– जातकाभरणम

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मकुंडलीमध्ये द्वितीय भावामध्ये बुधाची कन्या राशी आहे. याचा प्रभावामुळे धनसंग्रह करण्याचा सदैव प्रयत्न कराल आणि त्यामुळे संकटकाळी आपल्यापाशी काही ना काही संपत्ती असेल. आदरातिथ्य करण्यामध्ये आपल्याला आनंद मिळतो. त्यामुळे वेळोवेळी आपल्या घरी इतरेजनांना आमंत्रण देत राहाल. आपले कौटुंबिक जीवन शांत व प्रसन्न असेल व कुटुंब समृद्ध असेल. त्याचबरोबर एकमेकांची सेवा व मदतीचा भाव कायम असेल. परंतु पैतृक संपत्ती आपल्याला कमीच प्रमाणात मिळेल आणि जे काही प्राप्त कराल ते स्वपराक्रम व कष्टाने मिळवलेले असेल.

हे स्थान वाणीचे आहे आणि याचा स्वामी बुध वाणीचा प्रतिनिधी आहे त्यामुळे आपल्या वाणीमध्ये माधुर्य असेल आणि इतरेंजनांना आपल्या वाणीने प्रभावित कराल. त्याचबरोबर आपले विचार सरळ व स्पष्टपणे व्यक्त करू शकाल. त्याचबरोबर आपण आपल्या बुद्धिमत्तेने धनार्जन कराल आणि सुवर्ण आदि बहुमूल्य धातूंचा संग्रह करण्यास समर्थ असाल. अशाप्रकारे आपण धनवैभवाने युक्त आनंदाने आयुष्य व्यतित कराल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली माता एक सज्जन स्त्री असेल आणि घर सांभाळण्यास पूर्ण समर्थ आणि परस्पर सामंजस्य स्थापन करण्यास कुशल असेल. त्यामुळे कुटुंबामध्ये सुख शांती व समृद्धि राहील तसेच कुटुंबावर तिचे पूर्ण नियंत्रण असेल आणि सर्व कुटुंब तिच्या आज्ञेचे पालन करतील. ती कष्टाळू असली तरी कधी कधी शीघ्रकोपीपणा दाखवेल पण लगेच शांतही होत असेल.

आपले सुंदर घर असेल आणि घरामध्ये आपल्याला शांती लाभेल. आपल्या कार्यक्षेत्रामध्ये सतत व्यस्त राहात असल्याने गृहकार्यामध्ये कमीच लक्ष असेल. आधुनिक भौतिक सुखसुविधांनी संपन्न असाल आणि त्याचा उपभोग घ्याल. आपले घर फार मोठे नसले तरी सुंदर सजावटीमुळे त्याचे सौंदर्य आकर्षनीय असेल. तरूणपणीच आपले घर बनवाल. वाहनसुख लाभेल आणि वयाबरोबर यामध्ये वृद्धी होईल. पैतृक संपत्ती लाभेल. आपले उच्च शिक्षण व्यवसाय व्यवस्थापन किंवा विज्ञानासंबंधित विषयामध्ये असेल, पण उच्च शिक्षणामध्ये काही अडथळेदेखील येऊ शकतात. आपल्यासाठी तांत्रिक शिक्षण उत्तम व लाभप्रद ठरेल. कष्टाने व निष्ठेने आपले शिक्षण पूर्ण कराल. आपल्याला गुप्त धन, अंतप्रज्ञा व ज्योतिषसंबंधी विशेष ज्ञान प्राप्त होऊ शकते. शत्रूला पराजित करण्यास समर्थ असाल आणि इतरेजनांची सेवा कराल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपण एक उद्योगी, साहसी व पराक्रमी व्यक्ती असाल. उच्च शिक्षण प्राप्त करण्याची नेहमी रूची असेल आणि यासाठी प्रयत्नसुद्धा कराल. यामध्ये कमीअधिक प्रमाणात यश मिळेल. आपण उच्च श्रेणीचे धार्मिक दार्शनिक व आस्तिक व्यक्ती असाल आणि धर्म आणि शास्त्रानुसारच आपले अधिकांशी सांसारिक महत्वाची शुभ कामे संपन्न कराल. गुरूच्या प्रभावामुळे आपण मुक्त विचारधारणेचे, आत्मविश्वासी व धार्मिक क्षेत्रात उन्नती करणारे व्यक्ती असाल आणि यामध्ये आपल्याला कीर्ती व मानसन्मान प्राप्त होईल. शिकण्याची तीव्र इच्छा असेल आणि शीघ्र नवनवीन विचारांचे सृजन करण्याची क्षमता असेल. आपल्याला अंतर्ज्ञान नेहमी सत्य असेल.

आपली पती बुद्धिमान, शांत स्वभावाचे व कार्यदक्ष असतील आणि परस्परांना पूर्ण विश्वासाने सहकार्य करून दाम्पत्य जीवन सुखी कराल. आपल्यामध्ये ईश्वरावरील श्रद्धा व समत्वाची भावना वृद्धावस्थेत प्रबल होईल ज्यामुळे आपण अपेक्षित आदर व ख्याती प्राप्त कराल. संतती संख्या सीमित राहील आणि त्यांचा स्वभाव चांगला राहील. संतती बुद्धिमान असेल आणि आपल्या क्षेत्रात अपेक्षित यश प्राप्त करेल. वृद्धावस्थेत आपली श्रद्धापूर्वक सेवा करतील. उच्च शिक्षण प्राप्त करतील. वैदिक ज्ञान किंवा ज्योतिषावर आपली श्रद्धा असेल. याव्यतिरिक्त आपण वाहनादि साधनांनी सुसंपन्न, शत्रूनाशक, सज्जनांची सेवा करणारे व भाग्यशाली पुत्राने युक्त असाल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपला पती सुंदर, सुशील व चांगल्या स्वभावाची असेल. धर्मावर त्यांची श्रद्धा असेल. सत्याचे अनुसरण करेल आणि तुमची पूर्ण काळजी घेतील आणि प्रत्येक कौटुंबिक सुखसुविधा प्रदान करण्याचा त्यांचा प्रयत्न असेल, ज्यामुळे आपले दाम्पत्यजीवन सुख व प्रसन्नपूर्वक व्यतीत होईल. आपले पती उच्च शिक्षित व भाग्यशाली पुरूष असतील आणि भरपूर धनार्जन करून कुटुंबाची आर्थिक स्थिती सुध्द राहील. पण प्रौढावस्थेमध्ये कधी कधी आर्थिक अडचणींचा अनुभव येईल. आपण स्वभावाने आदर्श प्रेमी व पत्नी आहात. पतीप्रती ईमानदार व विश्वासपात्र राहाल, पण प्रेमाचे प्रत्यक्ष प्रदर्शन क्वचितच कराल.

आपले सामाजिक क्षेत्र व मित्रवर्ग विस्तृत राहील. पतीने याबाबतीत आपली ईर्षा करू नये व आपल्या मित्रवर्गाला पूर्ण सन्मान द्यावा अशी आपली हार्दिक इच्छा असते. अशी स्थिती निर्माण झाली तर परस्पर मतभेद व तणाव निर्माण होऊ शकतो, पण प्रयत्नपूर्वक अशी वेळ येऊ न देता परस्परांवर शंका व भ्रम मनामध्ये ठेऊ नये. कौटुंबिक शांती व समृद्धि राखण्यात आपण यशस्वी ठराल. मुलांवर आपला लळा असेल आणि त्यांच्याबाबतीत अभिमानी असाल. आपण कधीही इतरांकडून आपल्या पतीचा अपमान कधीच सहन करणार नाहीत. मेष, धनु, मिथुन व कुंभ राशी किंवा लग्नाचा जातक आपल्याला युक्त आहेत. म्हणून विवाहासाठी तसेच व्यावसायिक भागीदारीसाठी याच राशीची व्यक्ती निवडावी. व्यवसाय क्षेत्रात आपण एखादी संस्था किंवा उद्योगात सन्माननीय पदावर कार्य करू शकता. याव्यतिरिक्त आपला पती धार्मिक प्रवृत्तीची, प्रसिद्ध, सत्यवादी व दयाळू स्वभावाचा असेल, जेणेकरून आपले दाम्पत्य जीवन सुख व प्रसन्नपूर्वक व्यतीत होईल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपले वडीलांचे आरोग्य चांगले असेल. त्यांचा स्वभाव संवेदनशील असेल आणि आनंददायक जीवन व्यतित करण्यास आवडेल. ते एखाद्या चांगल्या पदावर आपल्या कार्यक्षेत्रात असतील. त्यांची माया व पूर्ण मदत आपल्याला मिळेल आणि त्यांची सेवा करण्यास आपणसुद्धा तत्पर असाल.

आपल्यासाठी एखाद्या प्रतिष्ठित उद्योगाचा व्यवस्थापक, संचालक किंवा विक्री व्यवस्थापकाचे पद अनुकूल असेल आणि अशा क्षेत्रामध्ये आपल्याला अपेक्षित उन्नती व यश प्राप्त होईल. त्याचबरोबर व्यापार किंवा सरकारी क्षेत्रामध्ये एखादे उच्च किंवा सन्माननीय पदसुद्धा प्राप्त करणे शक्य होईल. आपल्याकडे प्रशासनीक क्षमता असेल आणि न थकता खूप वेळ काम करण्यास सक्षम असाल.

राजकारणात विशेष रूची असणार नाही, पण जर आपण राजकारणात प्रवेश केला तर तिथे आपल्याला उचित सन्मान, कीती व राष्ट्रीय स्तरावर ओळख प्राप्त करण्यास समर्थ असाल. त्याचबरोबर आपण भौतिक उपकरणे, वीडिओ किंवा संगणक आदि क्षेत्रामध्ये यश प्राप्त होईल. विद्यालय व्यवस्था, आर्थिक क्षेत्रात कृषि भूमि व मालमत्ता आणि वित्त संस्थांमध्ये आपल्याला उचित लाभ प्राप्त होईल. याव्यतिरिक्त आपण स्वभावाने कार्यशील, सज्जन व दयाळू, सत्कमी, ज्ञानवान व चांगले आचरण असणारे व्यक्ती असाल आणि समाजामध्ये यथोचित सन्मान प्राप्त होत राहील.

फलादेश - 2026

गोचरीने यंदा गुरु सप्तम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापारात किंवा नोकरीत उन्नती होईळ. विनासायास एखादी सफळता मिळेळ. बेरोजगार ळोकांना ह्या काळात काम मिळेळ. अविवाहितांचे विवाह जुळतीळ. पत्नीकूडून सुख व सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध मधुर असतीळ. त्यामुळे कौटुम्बिक सुख मिळेळ. समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व सर्व ळोक तुम्हाळा मान देतीळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात चांगळी असेळ व धनार्जन करण्यात सुळ असाळ. परंतु खर्च पण वाढेळ. यंदा अन्य गोचरफळ अशुभ तर दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून शुभ फळांबरोबरच अशुभ फळे पण अनुभवाळ.

ह्या वर्षी शनी गोचरीने तिसऱ्या भावात आहे. म्हणून हा काळ शुभकारक आहे. ह्या काळात अडळे ळी व महत्वाची सर्व कार्ये पूर्ण होतीळ. त्याचबरोबर व्यापार व आर्थिक क्षेत्रात उन्नती होईळ. ज्यामुळे भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा दूरचे प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यापासून इच्छित ळाभ व सन्मान मिळेळ. नोकरीत बदतीची शक्यता आहे. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर प्रतिकूळ असळे तरी दशा शुभ असेळ. त्यामुळे वेळप्रसंगी शुभ फळांमध्ये कमतरता भासेळ. तरी सामान्यतः हे वर्ष चांगळे जाईळ.

यंदा राहू गोचरीने द्वितीयात व केतू अष्टमात असेळ. त्याच्या प्रभावाने शरीरप्रकृती मध्यम असेळ. मानसिक असंतोष अनुभवाळ. त्याचबरोबर कौंटुबिक सौरव्य साधारण असेळ. कुटुंबात परस्पर मतभेद निर्माण होतीळ. ह्या काळात महत्वाची कार्ये परिश्रमाने सम्पन्न होतीळ. सफळता पण मिळेळ. आर्थिक स्थिती मध्यम स्वरूपाची असेळ. धनप्राप्ती बरोबरच खर्चही अधिक होईळ. पण त्याचे जास्त दुष्परिणाम होणार नाहीत. यंदा इस्टेटीसंबंधी ळाभ होऊ शकतो.ह्या काळात अन्य गोचर शुभ तर दशा मध्यम स्वरूपाची असेळ. त्यामुळे कार्यक्षेत्रातीळ उन्नतीमध्ये अडचणी येऊ शकतात. पण पराक्रमाच्या जोरावर तुम्ही त्यावर मात कराळ. शुभ फळांच्या अधिक प्राप्तीसाठी नियमितपणे राहू–केतूची पूजा, जप व दानादि करावे.

मंगळ ची महादशा मधीं शनि चा अंतर 22/03/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर बुध चा अंतर प्रारंभ होणार। शनि चतुर्थ भाव मधीं वृश्चिक राशि मधी स्थित आहे। पण बुध नवम् भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होणार. नौकरी मधे पदोन्नति आणि अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि मिळकत वृद्धी होणारी. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती रहणारी आणि सहयोग प्रदान करणारे तसेच कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार. समाजातीळ सम्मान प्रतिष्ठा वृद्धी होणारी आणि समाज प्रभावित होणार. अतः आपण समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि महत्वपूर्ण आहे अतः आपण सगड़े उन्नती प्राप्त करणारी. मोठे अधिकारयां पासून संवन्ध स्थापित होणार. व्यापार मधे सफळता प्राप्त होणारी आणि विस्तार होणार नोकरी मधे उन्नती प्राप्त होणारी. काही तरी प्रवास होणारी आणि प्रवास पासून फायदे पण होणार. समाजातीळ यश सम्मान प्राप्त होणार आणि अनुकूल समृद्धी रहणारी

कुटुम्ब सुख शान्ती रहणारी तसेच परस्पर सहयोग. धर्म मधे चि उत्पन्न होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2027

गोचरवश यंदा गुरु अष्टम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असळात तरी वेळप्रसंगी चिंता अनुभवाळ. कष्ट व पराक्रमाने सांसारिक कार्यात सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात विरोधकांकडून अडथळे आल्यानी त्रास होईळ. पण परिश्रमपूर्वक त्यावर मात कराळ. यंदा एरवादा खटळा सुरु होऊ शकतो. आर्थिक स्थिती मध्यम स्वरूपाची असेळ. खर्च वादतीळ. ह्या काळात विशिष्ट ळाभ होण्याची संभावना आहे. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्रमत्रादिवर श्रद्धा वाढेळ व ज्ञानार्जन कराळ.अन्य गोचर फळ शुभ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. म्हणून परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ. तुम्ही नियमितपणे गुरुची पूजा तथा दान करावे.

गोचरीने यंदा शनी चवथ्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. सांसारिक कार्ये परिभमाने संपन्न कराळ. भावंड व कुटुंबाकडून कमीअधिक प्रमाणात सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती पण मध्यम असेळ. आर्थिक परिस्थिती सामान्य असेळ व धनप्राप्ती बरोबरच खर्च पण होतीळ. पण आर्थिक परिस्थितीवर त्याचा विशेष परिणाम होणार नाही. व्यापारात किंवा नोकरीत प्रगती होईळ. कर्ज होऊन तुम्ही घर बांधू शकता. जयामुळे सध्या अडचणी येतीळ पण भविष्यात ळाभ होईळ.ह्या काळात अन्य गोचर शुभ असेळ पण दशाफळ विशेष अनुकूळ नसेळ. शनीच्या प्रभावामुळे वेळप्रसंगी महत्वाच्या कामात अडचणी येऊ शकतात. ज्यामुळे मानसिक ताण येईळ. म्हणून अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ प्रभाव कमी होऊन शुभता वाढेळ.

यंदा राहू गोचरीने लग्नी व केतू सप्तम स्थानात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर मानसिक त्रास संभवतात. पती–पत्नीत मतभेद संभवतात. परंतु त्याचे दुष्परिणाम होणार नाहीत. संबंध सामान्य असतीळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. पराक्रम व कष्टाने धनप्राप्ती कराळ. पण खर्चही अधिक होतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षपूर्ण असेळ. कष्टानंतरच उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होऊन नवीन संबंध स्थापित होतीळ ज्यापासून भविष्यात सफळता मिळू शकते.त्याचबरोबर अन्य गोचर अनुकूळ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. त्यामुळे परिश्रम व संघर्षानंतरच कार्य सिद्ध होतीळ. त्यामुळे अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे राहू केतूची पूजा, जप व दान करावे.

ह्या वर्ष मंगळ ची महादशा मधीं तीन ग्रहां ची अंतर्दशा रहणारी। ह्या वर्ष बुध चा अंतर 19/03/2027 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर केतु अंतर्दशा प्रारंभ होणारी तसेंच 16/08/2027 पर्यंत चलणारी। ह्या वर्ष चा आखेर शुक्र ची अंतर्दशा मधीं होणार। तुमचीं जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी चतुर्थ भाव मधीं वृश्चिक राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी सामान्य उत्तम रहणार अतः विशेष प्रयोजने पूर्ण होणारी तसेच वांछित सफलता प्राप्त होणारी. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी चांगली रहणारी आणि

परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार. कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होउ सकतो समाजातील प्रतिष्ठा आणि यश प्राप्त होणार आणि समाज प्रभावित होणार व्यापार मधे लाभ होणार आणि नोकरी मधे उन्नती होणारी. अधिकारयां पासून मधुर संबन्ध स्थापित होणार अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः महत्वाकांक्षी प्रयोजने सफळ होणरी आणि कार्य क्षेत्र मधे सफळता भेंटणारी. नौकरी मधे उन्नति होउ सकतो तसेच लाभ मार्ग भेंटणार अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. कुटुम्ब मधे सुख सहयोग आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार तसेच प्रभावशाली माणूस बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार आणि इच्छित लाभ आणि सहयोग भेंटणार. समाजातील सम्मान प्रतिष्ठा भेंटणार आणि समाज प्रभावित होणार. अतः समय सदुपयोग कराय साठी प्रयत्न करावे. नवरा चा स्वास्थ्य अनुकूळ रहणार, जोखम कार्य पासून सावध रहावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातील फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातील यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2028

यंदा गोचरीने गुरु अष्टम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने पूर्ण कराळ. व त्यात सफळता पण मिळेळ. शत्रु व विरोधक ह्या काळात निर्बळ असतीळ. व्यापार व नोकरीमध्ये किंवा राजकारणात सफळता मिळेळ धन, मान–सन्मान मिळेळ. ह्या काळात अचानक ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ज्योतिष किंवा तंत्र–मंत्राची आवड असेळ. व त्याचे ज्ञान मिळवण्यास समर्थ असाळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे उन्नती होऊन मानसिक समाधान मिळेळ. शासन किंवा उच्चाधिकान्यांकडून ळाभ संभवतो. म्हणून हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीह व मानसिकदृष्टया पण स्वस्यता असेळ. ह्या काळात तुम्ही परदेशी जाळ किंवा दूरचे प्रवास कराळ. ह्या काळात प्रवासावर जास्त खर्च कराळ. त्याचबरोबर करमणुकीवर जास्त लक्ष द्याळ. ह्या वर्षी आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. केतूच्या प्रभवाने शत्रूवर विजय मिळवाळ. समाजत ळोक तुमचे प्रभुत्व स्वीकारातीळ. ज्यामुळे प्रतिष्ठा वाढेळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. ह्याशिवाय गोचर व दशा ह्या काळात शुभ असल्याने वर्ष चांगळे जाईळ.

मंगळ ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर 15/10/2028 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि चा अंतर प्रारंभ होणार। दोन्ही अंतर्दशा चा स्वामी ग्रह एकच भाव आणि राशि मधी स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः सगड़े कार्य सिद्ध होणार आणि व्यापार मधे फायदे होणार. नौकरी मधे पदोन्नती होऊ सकतो अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार प्रभाव शाली माणूस बरोबर संपर्क स्थापित होणार. तसेच मित्रता पण होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी अत्यंत शुभ आणि महत्व पूर्ण आहे अतः साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार. उत्तम कार्य पासून समाज प्रभावित होणार आणि सम्मान प्रदान करणार.

आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धन लाभ होणार आणि सहयोग संवन्ध, स्थापित होणार. सूर्य अंतर्दशा मधे आपण नेहमी मान सम्मान आणि यश प्राप्त करणारी मित्र पासून वांछित लाभ प्राप्त होणार तसेच उच्च पद प्राप्त होणार. कोणी प्रतियागिता परीक्षा मधे सफळता प्राप्त करणारी आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी कोर्ट केश वगरे मधे लाभ आणि सफळता प्राप्त करणारी आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी कोर्ट केश वगेरे मधे लाभ आणि सफलता प्राप्त होणारी कुटुम्ब सुख, समृद्धी आणि शान्ती प्राप्त होणारी.

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसऱ्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीह व मानसिकदृष्टया पण स्वस्यता असेळ. ह्या काळात तुम्ही परदेशी जाळ किंवा दूरचे प्रवास कराळ. ह्या काळात प्रवासावर जास्त खर्च कराळ. त्याचबरोबर करमणुकीवर जास्त लक्ष द्याळ. ह्या वर्षी आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. केतूच्या प्रभवाने शत्रूवर विजय मिळवाळ. समाजत ळोक तुमचे प्रभुत्व स्वीकारातीळ. ज्यामुळे प्रतिष्ठा वाढेळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. ह्याशिवाय गोचर व दशा ह्या काळात शुभ असल्याने वर्ष चांगळे जाईळ.

ह्या वर्ष राहु ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ मंगळ ची महादशा मधीं रवि चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति राहु ची महादशा मधीं राहु चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी प्रथम भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आहे अतः सूर्य प्रभाव पासून साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार. शुभ आणि विशेष कार्य सफळ होणार जुने कार्य सफल होणार आणि आकांक्षा पूर्ण होणारी कार्य क्षेत्र आणि सामाजिक स्थिति परिवर्तन होणार. मोठे अधिकारयां पासून संवन्ध स्थापित होणार आणि मित्र वर्ग हार्दिक सहयोग प्रदान करणारे. शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी समय सदुपयोगी आहे अतः प्रयत्न क न सफळता प्राप्त करावे.

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ रहणार अतः शुभ परिणाम प्राप्त होणार. परिश्रम पासून सफळता प्राप्त होणारी तसेच उन्नति प्राप्त करणारी आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन होणार म्हणजे मिळकत वृद्धी होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर चांगला संबन्ध रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी तसेच परस्पर मधुर संबन्ध रहणार. नवीन पूंजी लाभ होउ सकतो पण जोखम कार्य क नका. साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार तसेच नवीन प्रयोजने स्थापित होणारी. शत्रु असफल होणारे आणि महत्वाकांक्षा सफळ होणारी.

फलादेश - 2030

गोचरीने यंदा गुरु दशम स्थानात असेळ. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे राहीळ. व्यापार किंवा नोकरीत ह्या काळात उन्नती संभवते. त्याचबरोबर उच्चाधिकारी व राजकारणी ळोकांशी चांगळे संबंध बनतीळ. फळतः त्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळेळ. कौटुम्बिक सुख–समृद्धीकरता हे वर्ष चांगळे असेळ. सर्व जण प्रेमाने रहातीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व धनप्राप्ती संभवते. ह्या काळात विभांती मिळणार नाही. सांसारिक जबाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात शाळीन व्यवहार ठेवावा. अन्य गोचरफळ अशुभ पण दशा शुभ फळे देईळ. म्हणून सामान्यतः हे वर्ष चांगळे असेळ.

गोचरीने शनी यंदा पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. दृष्टिकोनात बदह संभवतो. त्याचबरोबर सांसारिक कार्ये परिश्रम व उत्साहाने सम्पन्न कराळ व त्यात कमीजास्त प्रमाणात सफळता पण मिळेळ. अन्य ळोकांशी संबंध सामान्य असतीळ व मान मिळेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. संतती सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ते आपल्या कार्यक्षेत्रात सफळता मिळवतीळ. त्याचबरोबर कौटुंबिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होऊ शकते.ह्या काळात अन्य गोचर चांगळे असेळ पण दशा विशेष अनुकूळ नसेळ त्यामुळे महत्वाच्या कामात अडथळे येऊ शकतात. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. ह्या वर्षी राजकीय ळोकांशी संपर्क येऊ शकतो. पण त्यांच्यापासून ळाभ कमीच होईळ. त्यामुळे कष्टपूर्वक कार्य सम्पन्न करण्यास तत्पर असावे.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी प्रथम भावात सिंह राशि मधीं स्थित आहे।